मैथिली (प्रतिष्ठा)
बी० ए० पार्ट - II
पेपर - III

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक - 27/04/21

दिनांक 11.07.20 क शेष

प्रकरण - वर्णरत्नाकर

1. ग्रंथक विषय ओ स्वरूप :-

मिथिलाक इतिहासमे ज्योतिरीश्वरक कालकेँ स्वर्णयुग कहल गेल अछि। एहि समयमे मिथिलाक सैन्य शक्ति, आर्थिक समृद्धि, संस्कृतिक उल्लास, विद्याक विकास, आओर अखंड स्वतन्त्रता, सभ विषयमे मिथिला भारतक मानचित्रमे उत्कृष्ट स्थान पओने छल। एहि कालमे नव्यन्यायक प्रवर्तक उदयन, गंगेश, वर्द्धमान, छलाह। धर्मशास्त्रमे - स्मृति कल्पतरु (लक्ष्मीधरक) स्मृतिसार (श्रीदत्तक आचारादर्श) स्मृतिरत्नाकर (चण्डेश्वर ठाकुर) एहि कालमे लिखल गेल अछि। मीमांसामे सेहो विद्वान भेलाह। सभसँ बेसी बाढ़ि मातृभाषा मैथिलीमे सेहो वर्णरत्नाकर सन ग्रंथ लिखल गेल। बीचमे - बीचमे मुसलमानक आक्रमण त' होइत छल, किन्तु ताहिसँ

मिथिलाक आन्तरिक जीवनमे कोनो बाधा नहि होइत छल। मिथिला वही समयमे भारतवर्षक उच्चतम विद्यापीठ मानल जाइत छल। देशक कोना-कोनासँ ज्ञान-पिपासु छात्र-लोकनि मिथिला आबिक विद्यार्जन करैत छलाह। प्रजामे वर्ग-भेद रहितहुँ पारस्परिक सौमनस्य छल। वर्णरत्नाकर स्वयं एहि युगक सुख-शान्तिपूर्ण उल्लासमय जनजीवनक सुन्दर वर्णन थिक। वर्णरत्नाकर मे मुख्यत: राजाकेँ केन्द्रबिन्दु बनाक' परिकल्पित अछि, किन्तु प्रसंगवश सामान्य जनजीवनक चित्रण भेल अछि। समाजक सभ वर्गक रहिमे वर्णन कयल गेल अछि, कोनहु ठाम शोषण, उत्पीड़न, घृणाक आभास नहि भेल अछि। तेँ एहि युगकेँ मिथिलाक लेल स्वर्ण युग कहि सकैत छी।

शेष अगिला अंकमे